बहारे तहरीर
दूसरा हिस्सा
عبد مصطفی
AM ABDE MUSTAFA

ABOUT US

Abde Mustafa Official, a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at
Our motto : Serving Quraano Sunnat, preaching Ilme Deen and to reform people.

This team came into existence in the year 2012 and in very few years this team did a lot of acts.
There is also a special place of Abde Mustafa Official on social media networking sites.

Lots of people from all over the world are connected to us via Facebook, WhatsApp, Instagram, Telegram, YouTube and Blogger.

Abde Mustafa Official

abdemustafaofficial.blogspot.com

क्या हुज़ूर गौसे पाक और सरकार गरीब नवाज़ की मुलाकात हुई?

चन्द गैर मुअतबर किताबों में इस तरह के वाक़िआत दर्ज है जिनसे ज़ाहिर होता है कि हुज़ूर गौसे पाक और सरकार गरीब नवाज़ अलैहिमुर्रहमा की मुलाक़ात हुई है लेकिन हक़ीक़त ये है कि दोनो बुज़ुर्गों की मुलाकात साबित नहीं

इसकी तफ्सील बयान करते हुए शारहे बुखारी, हज़रत अल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी अलैहिर्रहमा लिखते हैं :-

इस पर सारे मुअर्रिखीन का इत्तिफाक़ है कि सरकार गौसे पाक रदिअल्लाहु त्आला अन्हु का विसाल 561 हिजरी में हुआ, इस पर भी क़रीब क़रीब इत्तिफाक़ है कि हज़रते गरीब नवाज़ रदिअल्लाहु त्आला अन्हु ने 15 साल की उम्र से इल्मे ज़ाहिरी के हुसूल के लिये सफर किया।

एक मुद्दत तक आप समरक़न्दो बुखारा में इल्म हासिल करते रहेव।

उलूम -ए- ज़ाहिरी की तक्मील के बाद मुर्शिद की तलाश में निकले फिर 20 साल तक मुर्शिद की खिदमत में हाज़िर रहे।

20 साल के बाद खिलाफत से सरफराज़ फरमाये गये फिर मदीना -ए- मुनव्वरा में हाज़िर हुए और सरकार-ए-आज़म ﷺ ने हिन्दुस्तान की विलायत अता फरमायी।

अब हिसाब लगायें कि 15 साल की उम्र तक हज़रते गरीब नवाज अपने वतन में रहे और 20 साल तक इल्म-ए- ज़ाहिर तलब फरमाते रहे तो ये (20+15) 35 साल हो गये

537 हिजरी में विलादत हुई, 35 साल तक इल्मे ज़ाहिर की तलब में रहे (537+35) यानी 572 हिजरी में आपने ईराक़ का रुख किया जबकि हुज़ूर गौसे आज़म रदिअल्लाहु त्आला अन्हु का विसाल 561 हिजरी में हो चुका था यानी हज़रते गरीब नवाज ने जब ईराक़ का रुख किया उससे 11 साल पहले हुज़ूर गौसे आज़म रदिअल्लाहु त्आला अन्हु का विसाल हो चुका था, फिर मुलाक़ात कैसे हुई?

(ملخصاً وملتقطاً: فتاوی شارح بخاری، ج2، ص128 تا 131، ط دائرۃ البرکات گھوسی، س1433ھ)

मज़्कूरा तफ्सील से ये बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है कि सरकार गौसे आज़म और सरकार गरीब नवाज अजमेरी अलैहिमुर्रहमा की मुलाक़ात साबित नहीं।

अब्दे मुस्तफ़ा

इल्म को लिख़ कर कैद कीजिए

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक रदिअल्लाह त'आला अन्हु फरमाते है के इल्म को लिख कर कैद कर लो।

(نوادر الاصول، 1/265)

जब भी कोई ऐसी बात मालूम हो जिसे आप अपनी याददाश्त में महफ़ूज़ करना चाहते हैं तो चाहिए के उसे लिख ले। हमारे बुज़ुर्गों का भी यही तरीका था के अहम बातों को लिख लिया करते थे।

हज़रते सय्यिदुना खलील बिन अहमद अलैहिर्रहमा फरमाते है के मैंने जो कुछ सुना लिख लिया, जो कुछ लिखा वो याद कर लिया, जो कुछ याद किया उससे फायदा उठाया है।

(جامع بیان العلم وفضلہ، ص108)

अब्दे मुस्तफ़ा

इमाम रबी बिन नाफे हलबी और हज़रत अमीर -ए- मुआविया

इमाम रबी बिन नाफे हलबी (मुतवफ्फा 241 हिजरी) फरमाते हैं कि हज़रत अमीर -ए- मुआविया रदीअल्लाहु त्आला अन्हु रसूले करीम ﷺ के सहाबा का पर्दा है, जब कोई शख्स पर्दा उठाता है तो जो कुछ उसके पीछे है उस पर भी जुर्रत करता है यानी जो हज़रत अमीरे मुआविया रदिअल्लाहु त्आला अन्हु पर तान करता है एक वक़्त ऐसा आता है कि वो दीगर सहाबा पर भी ज़ुबान दराज़ करता है।

-البدایہ والنھایہ، ج8، ص148

-تاریخ بغداد، ج1، ص577

नबी के दुश्मन को ललकार

जंग -ए- उहुद में जब काफिरो के तरफ से इब्ने सबा मैदान ने आया तो हज़रते सैय्यिदुना अमीर -ए- हम्ज़ा रदिअल्लाह त'आला अन्हु ने उस को ये कह कर ललकारा :-

یا ابن مقطعۃ البظور اتحاد اللہ و رسولہ ثم شد علیہ فکان کامس الذاھب

तर्जुमा : (हज़रते अमीर -ए- हम्ज़ा रदिअल्लाह त'आला अन्हु ने फ़रमाया के) "ओ औरतो के खतने करने वाली के लड़के! तू अल्लाह त'आला और उस के रसुल से दुश्मनी करता है?"

ये कह कर आपने उस पर सख्त हमला कर दिया और उस को वासिल -ए- जहन्नम कर दिया

(1) صحیح بخاری، کتاب المغازی، باب قتل حمزہ

(2) مسند احمد بن حنبل، ج3، ص501

(3) صحیح ابن حبان، ج6، ص300

(4) دلائل النبوۃ للبیہقی، ج3، ص242

(5) صفۃ الصفوۃ، ج1، ص373

(6) المنتظم، باب غزوۂ احد

(7) جامع الاصول، ج8، ص248

(8) عمدۃ القاری، ج17، ص211

(9) ذخائر العقبی، ج1، ص177

(10) البدایہ والنہایہ، ج4، ص19

(11)السیرۃ النبویۃ لابن کثیر، ج3، ص38

(12)تاریخ الاسلام للذہبی، ج1، ص208

(13)سیر اعلام النبلاء، ج1، ص178

(14)جامع الاحادیث للسیوطی، ح41303

(15)سبل الہدی والرشاد، باب غزوۂ احد

(ملخصاً: لمعات مصطفی ﷺ، ص123،124)

अब्दे मुस्तफ़ा

मुसलमान कौन?

डरो खुदा से होश करो कुछ मकरो रिया से काम ना लो,
या इस्लाम पर चलना सीखो, या इस्लाम का नाम ना लो।

मौजूदा ज़माने में मुसलमानों को अपना ईमान और अक़ीदा बचाना बहुत मुश्किल हो गया है। ईमान के चोर अपनी चालबाज़ों और फरेबकारों के ज़रिये भोले भाले मुसलमानो की आख़िरत बर्बाद करने में कोई कसर बाकी नही छोड़ रहे है।
ऐसे में ज़रूरी है कि हमें उलमा ए हक़ की तरफ रुजू करना चाहिए ताकि हम गुमराह फिरक़ों की फरेबकारियो से आगाह हो सकें और अपने ईमान और अक़ीदे की हिफाज़त कर सकें।
अभी कुछ दिनों पहले मकल बनाम "इस्लाहे समाज की बुनियादी बातें" नज़र से गुज़रा। जिसको "आलमीन एजुकेशनल एंड वेलफेयर सोसाइटी बरेली" की जानिब से शाया किया था। पढ़ कर बहुत हैरत हुई कि आज के नाम निहाद मुसलमानों को क्या हो गया है जो काफिरों के क़दमो में गिरे जा रहे हैं। जिन लोगों के साथ इस्लाम मुहब्बत करने को हराम क़रार देता है उन्ही को अपना भाई बता कर मुसलमानों को उनसे मुहब्बत करने का हाथ बढ़ाया जा रहा है और शरीअते इस्लामिया को मज़रूह किया जा रहा है।

काफ़िर की मौत से भी डरता हो जिसका दिल,
कौन कहता है उसे कि मोमिन को मौत मर।

उस मकाले में सूरह निसा की पहली आयत का हवाला देते हुए ज़ाहिर किया गया कि "सारे इंसान आपस मे भाई-भाई हैं, चाहे वो किसी भी धर्म के हों लिहाज़ा हमें किसी से नफरत नहीं करना चाहिए।"
क़ुरआन पाक के आप तमाम तराज़िम व तफ़्सीर पढ़ लें लेकिन आपको इस आयत का ये मतलब नही मिलेगा लेकिन अफसोस सद अफसोस काफिरों और मुशरिकों को अपना भाई बनाने के लिए ये लोग इस हद तक गुज़र गये कि मआज़'अल्लाह इन्होंने क़ुरआन पर झूट बांधा और क़ुरआन पर झूट का मतलब इन्होंने अल्लाह पर झूट बांधा।

इरशादे रब्बानी है:

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖ
(سورۂ اعراف، 37)

"इस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसने अल्लाह पर झूट बांधा या उसकी आयतें झुटलाये।"
(सूरह अ'अ़राफ़, 37)

क़ुरआन मजीद से कुछ आयात पेश कर रहे है जिन्हें पढ़ कर आप का ज़हन बिल्कुल साफ हो जाएगा कि अल्लाह ने हमें क्या करने का हुक्म दिया है और हम क्या कर रहे है और नाम निहाद मुसलमानों का शक़ भी दूर हो जायेगा।
इंशा अल्लाह

(1)मुसलमान मुसलमान भाई-भाई है। (सूरह हज़रात:10)
(2) मुसलमान काफिरों को अपने दोस्त न बना लें, मुसलमान के सिवा जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह से कुछ इलाक़ा न रहा।

(सूरह आले इमरान:28)

(3) ऐ ईमान वालों! अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो अगर वो ईमान पर कुफ्र पसंद करें और तुम में से जो कोई उनसे दोस्ती करे।
(सूरह तोबा:23)

(4) ऐ ईमान वालों! जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी खेल बना लिया है वो जो तुमसे पहले किताब दे गये (यहूदो नसारा) और काफ़िर उनमे से किसी को अपना दोस्त न बनाओ। अल्लाह से डरते रहो अगर ईमान रखते हो
(सूरह माइदा:57)

(5) ज़रूर तुम मसलमानों का सब से बढ़ कर दुश्मन यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे।
(सूरह माइदा:82)

मज़कूरह आयात से हमें पता चल गया कि काफिरों और मुशरिकों से दोस्ती करना कैसा है अल्लाह ने यह तक फरमाया कि जो कोई उनसे दोस्ती करेगा तो अल्लाह से उसका कुछ इलाक़ा नही यानी वो सीधा जहन्नम रसीद हो जाएगा। और तुम्हारे बाप और भाई भी ईमान और कुफ्र को सिर्फ पसंद करे तो उनसे भी दोस्ती न निभाओ। उन्हें भी दूध में से मक्खी की तरह निकल कर फेंक दो। और फरमाया काफिरों ने तुम्हारे दीन का हंसी खेल बना लिया है तो तुम कैसे उन्हें भाई या दोस्त बना सकते हो और अगर तुम ईमान वाले होगे, अल्लाह से डरते होगे तो हरगिज़ उन्हें दोस्त नही बनाओगे।
अल्लाह त'आला ने मुसलमानों का सबसे बड़ा दुश्मन यहूदियो और मुशरिकों को बताया। हम जिस मुल्क़ में रहे रहे है इसमें तादाद के हिसाब से मुशरिक ज्यादा हैं इसलिए हमारे सब से बढ़ कर दुश्मन मुशरिक हैं। अफसोस आज नाम निहाद मुसलमान अल्लाह के फरमान को भूल कर मुशरिकों के तलवे चाटते नज़र आ रहे है। और साथ दोस्ती निभाते नज़र आ रहे हैं। क्या इसीलिये तुम्हें मुसलमान बनाया गया था कि तुम दुनिया में

आ कर काफिरो मुशरिकों से मुहब्बत और उल्फत का दर्स दो। आज तुमने अल्लाह और उसके रसूल नबी -ए- करीम ﷺ को नाराज़ किया है। तभी मुसलमान दर दर की ठोकरें खा रहे हैं। आज मुसलमान हर जगह मुसीबतो में नज़र आ रहे है सिर्फ इसलिए कि तुम अपने दीन को छोड़ कर कुफ्र में इज़्ज़त तलाश करने लग गए हो। काफिरों से मुहब्बत का पाठ पढ़ने वाले अपनी आख़िरत का जनाज़ा ना निकालें। और हाँ अगर उन्हें कुफ्र पसंद है तो इस्लाम का नाम ना लें और न ऐसे मकाले छाप कर मुसलमानों को काफिरों से मुहब्बत करने का दर्स दें। इज़्ज़त अल्लाह के हाथ में है और तुम काफिरों से इज़्ज़त की भीक मांगते हो।

इरशादे रब्बानी है:
वो जो मुसलमानों को छोड़ कर काफिरों को दोस्त बनाते हैं क्या उनके पास इज़्ज़त ढूंढते है? तो इज़्ज़त तो सारी अल्लाह के लिये है।

ना ले काफिरों से मदद कोई सुन्नी
सुलह कुली फ़ितने मिटा ताज वाले

हमारा दीन हमें हर किसी से प्यार मुहब्बत करने की इजाज़त नहीं देता क्योंकि जैसा हमारे लिए खाने पीने की हदें बनी हुई हैं कि ये हलाल है ये हराम है ऐसे ही दोस्ती और दुश्मनी की भी हदें है कि ये दोस्ती हराम है और ये हलाल।

काफिरों से दोस्ती निभाने वालों के लिए सजा:
इरशादे रब्बानी है:

لَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّار

और ज़ालिमों की तरफ न झुको कि तुम्हें आग छुयेगी।
(सूरह हूद:113)

मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी रहमतुल्लाह अलैह इस आयत की तफ़्सीर में फरमाते है :

हरगिज़ माइल न होना उन बदबख्त काफिरों की तरफ जो दुनिया जहाँ में खाली रहा। यानी क़ौली और अमली मुहब्बत तो दरकिनार, उन की तारीफ का दिल मे ख्याल तक ना आने पाये, ना उनके किसी अमल से खुश होना ना दीन के मुक़ाबले कभी किसी मुआमले में किसी काफिर की इताअत करना, ना काफिरों और बदकारों की मजलिसों, सोहबतों में बैठना। इनमे से जो काम भी किया जाये तो माइलन (यानी काफिरों की तरफ झुकना) पाया गया। लिहाज़ा ए मुसलमानों! अगर तुम बाज़ न आये तो अल्लाह और उसके रसूल अलैहिस्सलाम की मुहब्बत तुम से मिट जाएगी। उसका अंजाम क्या होगा तुम को जहन्नम की आग भड़कती हुई छुयेगी औए उसका छूना भी बड़ा अज़ाब है। ये तो सिर्फ माइलन ज़ालिम की सजा है तो अंदाज़ा लगाओ कि ज़ालिम की सजा क्या होगी!

मुसलमान कौन?
इरशादे रब्बानी है:

(1)فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

तो ए महबूब! तुम्हारे रब की क़सम वो मुसलमान न होगा जब तक कि अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम ना बनाये। फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में इस से रुकावट ना बने और उसे मान ले।
(सूरह निसा:65)

यानी मुसलमान वही है जो अपने दीनी और दुनियावी मुआमलों में हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हुक्म को माने। जैसे हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया : ऐसा करे अपनी तरफ से दीन में तावीलें ना करे।

(2)لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ

यानी मुसलमान वही है जो अल्लाह और उसके रसूल अलैहिस्सलाम से मुखालिफत करने वाले को अपना दुश्मन जाने। चाहे वो उसके बाप या किसी दोस्त या भाई या रिश्तेदार ही क्यों न हो।

(3)يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَ يُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ

ऐ ईमान वालों! तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा (यानी मुर्तद हो जाएगा) तो अनक़रीब अल्लाह ऐसे लोग लायेगा कि वो अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उनका प्यारा, मुसलमानो पर नरम और काफिरों पर सख्त।

(सूरह माइदा :54)

यानी मुसलमानों की पहचान ये है कि वो अपने मुसलमान भाई के लिए नरम होते हैं, काफिरों के लिए सख्त होते हैं।

अल्लाह ता'अला हमें काफिरों, बदमज़हबो, गुमराहों, ज़ालिमों की मुहब्बत से बचाये और मुसलमानों से अच्छे अख़लाक़ से पेश आने की तौफ़ीक़ अता फरमाये। आमीन।

अहकर मुहम्मद हस्सान रज़ा राइनी

तफरीहुल ख़ातिर में एक झूटी रिवायात

मशहूर क़िताब "तफरीहुल ख़ातिर" में हुज़ूर सय्यिदुना गौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की निस्बत से ये रिवायात दाखिल है के आप रदीअल्लाहु त'आला अन्हु का एक खादिम फौत हो गया।

उसकी बीवी आपकी खिदमत में हाज़िर हुई और आह वज़ारी करने लगी। उसने आपसे अपने शौहर को ज़िंदा करने की इल्तेजा की।

आपने इल्मे बातिन से देखा के मलकुल मौत उस दिन क़ब्ज़ की गयी तमाम रूहो को ले कर आसमान पर जा रहे है। आपने उसे रोका और कहा के मेरे खादिम की रूह वापस कर

दो तो मलकुल मौत ने ये कह कर मना कर दिया के मैंने तो रूहे अल्लाह त'आला के हुक़्म से क़ब्ज़ की है।
जब मलकुल मौत ने रूह वापस नहीं की तो आपने रूहो की टोकरी (जिस में उस दिन क़ब्ज़ की गयी तमाम रूहे थी, वो) छीन ली! इससे हुआ ये के जितनी रूहे थी वो सब अपने अपने जिस्मो में वापस चली गयी।
मलकुल मौत ने अल्लाह त'आला के हुज़ूर अर्ज़ की : मौला तू जानता है जो तकरार आज मेरे और अब्दुल क़ादिर के दरमियान हुई, उसने तमाम अरवाह छीन ली।
इस पर अल्लाह त'आला ने इरशाद फ़रमाया के ए मलकुल मौत बेशक अब्दुल क़ादिर मेरा महबूब है, तूने उस के खादिम की रूह को वापस क्यों नहीं किया? अगर एक रूह वापस कर देते तो इतनी रूहे अपने हाथों से दे कर परेशान ना होते।

(ملخصاً: تفریح الخاطر فی مناقب الشیخ عبد القادر، المنقبۃ الثامنۃ، ص68، ط قادری رضوی کتب خانہ لاہور)

इसी रिवायात के बारे में इमाम -ए- अहले सुन्नत, आलाहज़रत रहिमहुल्लाह से सवाल किया गया, बस फ़र्क़ इतना है के यहाँ खादिम की बीवी का ज़िक्र है और सवाल में खादिम के बेटे का, सवाल में ये इज़ाफ़ा भी है के जब मलकुल मौत ने रूह वापस करने से इन्कार किया तो हुज़ूर गौसे पाक ने उन्हें एक थप्पड़ मारा जिस से मलकुल मौत की आँख बाहर निकल गयी!
आलाहज़रत रदिअल्लाह त'आला अन्हु ने जवाबन इरशाद फ़रमाया के ये रिवायात इब्लीस की घड़ी हुई है और इस का पढ़ना और सुनना दोनों हराम!
अहमक़, जाहिल, बे अदब ये समझता है के (इस रिवायात को बयान कर के) हज़रते गौसे आज़म की ताज़ीम करता है हालाँकि वो हुज़ूर की सख्त तौहीन कर रहा है।

(انظر: فتاوی رضویہ، ج29، ص630، ط رضا فاؤنڈیشن لاہور، س1426ھ)

अब्दे मुस्तफ़ा

बारह साल पहले डूबी हुई बारात

चन्द किताबो में हुज़ूर सय्यिदुना गौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की एक करामात का ज़िक्र मिलता है के आपने 12 साल पहले डूबी हुई बारात को वापस निकाल दिया।

ये रिवायात अवाम -ओ- खवास में बहुत मशहूर है लिहाज़ा मुकम्मल वाकिया लिखने की ज़रुरत नहीं।
इस रिवायात पर गुफ़्तगू करते हुए खलीफा -ए- आलाहज़रत, हज़रत अल्लामा सय्यद दीदार अली शाह अलैहिर्रहमा फरमाते है के हुज़ूर गौसे आज़म की करामात दर्जा -ए- तवातुर को पहुची हुई है जैसा के इमाम याफई ने लिखा है के "आपकी करामात मुतवातिर या तवातुर के करीब है और उलमा के इत्तेफ़ाक़ से ये अम्र मालूम है के आपकी मानिन्द करामात का ज़ुहुर आपके बगैर आफाक के मशाइख में से किसी से ना हुआ" मगर ये बारात वाली रिवायात किसी मोतबर ने नहीं लिखी लेकिन इससे ये लाज़िम नहीं आता के हज़रते गौसे पाक इस दर्जे के ना थे
अक्सर मिलाद ख्वां (मुकर्रिरीन) वाकिफ ना होने की वजह से मुहमल रिवायात औलिया व अम्बिया की तरफ मंसूब कर देते है और समझते है के अगर ये यहाँ ग़लत है तो भी उनकी तारीफ हमने पूरी कर दी, ये सवाब की तवक़्क़ो भी करते है, खैर ख़ुदा इन पर रहम करे।
हज़ारो करामात औलियाउल्लाह और असहाब -ए- रसूल अलैहिस्सलाम से ज़ाहिर ना हुई तो क्या झूटी रिवायात कह देने से उनका रुतबा बढ़ जायेगा? हरगिज़ नहीं
असहाब -ए- रसूल तमाम गौसो क़ुतुब -ओ- औलिया से अफ़ज़ल है और तहक़ीक़ से साबित है के औलियाउल्लाह की करामात अक्सर असहाब से ज़्यादा है, बहरहाल ये रिवायात किसी मोतबर ने नहीं लिखी और इमकान -ए- अक़्ली से कोई अम्र यक़ीनी नहीं हो सकती

(ملخصًا: فتاوی دیداریہ، ص45)

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आलाहज़रत रहिमहुल्लाह से जब इस रिवायात के मुताल्लिक़ सवाल किया गया तो आपने फ़रमाया के अगरचे ये रिवायात नज़र से किसी किताब में न गुज़री लेकिन ज़ुबान पर मशहूर है और इस में कोई अम्र खिलाफ -ए- शरह नहीं लिहाज़ा इस का इन्कार ना किया जाये।

(انظر: فتاوی رضویہ، ج29، ص630، ط رضا فاؤنڈیشن لاہور، س1426ھ)

मालूम हुआ के इस रिवायात का कोई मोतबर व मुस्तनद माखज़ मौजूद नहीं है और एक पहलु ये है के बक़ौल इमाम -ए- अहले सुन्नत इस रिवायात का इन्कार भी न किया जाये लेकिन फिर भी हम कहते है के ज़्यादा मुनासिब यही है के ऐसी रिवायात को बयान करने से परहेज़ किया जाये। हज़रते गौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के फ़ज़ाईल बयान करने के लिए दीगर सहीह रिवायात को शामिल -ए- बयान किया जाये।

अब्दे मुस्तफ़ा

मेरा मुरीद जन्नत में

हज़रते सय्यिदुना गौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने अपने मुरीदीन के लिए जो बशारते इरशाद फरमाई है के मेरा मुरीद बगैर तौबा के ना मरेगा और मैं उस के लिए जन्नत का ज़ामिन हूँ वगैरा, इनको बयान करते हुए ऐतेदाल को मल्हूज़ रखना रखना बहुत ज़रूरी है।
हमारे कहने का मतलब ये है के अवामुन्नास के सामने ये या इस तरह की बातों को इस अंदाज़ ने पेश ना किया जाये जिससे वो मैदान -ए- अमल में हथियार दाल दे और इसी उम्मीद पर नेक कामो को तर्क कर दे के हमारे लिए तो जन्नत की बशारत रखी हुई है।
इस का ये मतलब नहीं के इन बशारतो को छुपाया जाये और सिर्फ खौफ पैदा करने के लिए ऐसा तर्ज अपनाया जाए के एक आम आदमी ये समझ बैठे के अब तो हमारा कुछ हो ही नहीं सकता और जहन्नम हमारे लिए तैयार है।
मुख़्तसर ये के खौफ और उम्मीद के दरमियान रहा जाये।

इमाम फ़क़ीह अबुलैस नस्र समरकंदी हनफ़ी अलैहिर्रहमा इसी अम्र की बाबत लिखते है के वाइज़ (मुकर्रिर) खौफ व उम्मीद दोनों को अपना मौज़ू -ए- सुखन बनाये
सिर्फ खौफ या सिर्फ उम्मीद के मौज़ू पर बयान न करे क्योंकि ऐसा करना ममनू है।

(انظر: بستان العارفین للسمرقندی، ص58)

अब्दे मुस्तफ़ा

तू मेरा गुलाम, तेरा बाप मेरे नाना का गुलाम

हसनैन करीमैन की शानो अज़मत बयान करनी हो या फारूक़ -ए- आज़म का इश्के रसूल, दोनों के लिये एक रिवायत कसरत से बयान की जाती है जो कुछ यूँ है :-
एक मर्तबा हसनैन करीमैन और फारूक़ -ए- आज़म के बेटे बचपन में साथ मिलकर खेल रहे थे कि अचानक किसी बात को लेकर लड़ायी हो जाती है! बातों ही बातों में इमाम हुसैन रदिअल्लाहू त्आला अन्हु ने फारूक़ -ए- आज़म के शहज़ादे से फरमाया कि "तू मेरा गुलाम तेरा बाप मेरे नाना का गुलाम"
ये सुनकर हज़रते उमर फारूक़ रदिअल्लाहू त्आला अन्हु के साहबज़ादे को बुरा लगा और वो इस बात की शिकायत करने के लिये अपने वालिद के पास चले गये।
वालिद साहब से कहा की हसनैन मुझे ऐसा ऐसा कहते है।
हज़रते उमर फारुक़ रदिअल्लाहू त्आला अन्हु ने अपने बेटे से फरमाया कि जाओ और उनसे ये बात लिखवाकर ले आओ, चुनान्चे इब्ने उमर ने हसनैन करीमैन से कहा कि आपने जो कहा है उसे कागज़ पर लिख दीजिये
इमाम हुसैन रदिअल्लाहू त्आला अन्हु ने वही बात लिख भी दी।
जब हज़रते उमर फारूक़ रदिअल्लाहू त्आला अन्हु के हाथ में वो कागज़ दिया गया तो आप उसे चूमने लगे और बहुत खुश हुए, फिर आपने बेटे से फरमाया कि बेटा अब मुझे मैदान -ए- हश्र का कोई खौफ नहीं क्युंकि मुझे आले रसूल ने रसूलुल्लाह का गुलाम लिख दिया है, इस चिठ्ठी को मेरे कफन मे रख देना ताकि मुनकर नकीर मुझसे सवालात ना करें, फिर आपने अपने बेटे को नसीहत करते हुए हसनैन करीमैन के फज़ाइल बताये और उनकी गुलामी करने का हुक्म दिया।

ये वाक़िया मुख्तलिफ अल्फाज़ में बयान किया जाता है।
ये वाक़िया इतना मशहूर है कि अक्सर मुक़र्रिरीन इसे बयान करते हैं।
हमने किताबों में इसे तलाश किया लेकिन हमें नहीं मिला, इसके बर अक्स जो मिला वो पेशे खिदमत है :-

हज़रत अल्लामा मुफ्ती शाह मुहम्मद अजमल क़ादरी रहीमहुल्लाह से इसी वाक़िये के मुतल्लिक सवाल किया गया कि ये वाक़िया सहीह है ये गलत? साइल ने ये भी लिखा है कि इस वाक़िये पर सूफी अज़ीज़ अहमद साहब बरेलवी और चन्द उल्मा ने एतराज़ किया है

आपने जवाब में तहरीर फरमाया:-

ये वाक़िया किसी अरबी की मुअतबर व मुस्तनद किताब में मेरी नज़र से नही गुज़रा तो यक़ीन के साथ ना इसको सहीह कहा जा सकता है ना गलत।

(فتاوی اجملیہ،ج4،ص629،ط شبیر برادرز لاہور،س2005ء)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा कहता है कि जो हज़रात इस रिवायत को बयान करते हैं उन पर लाज़िम है कि हवाला भी बयान करें और किसी भी रिवायत को बयान करने से पहले इस बात को मद्दे नज़र रखें कि सिर्फ मशहूर होने की वजह से किसी रिवायत को बयान करना दुरुस्त नहीं।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

जा तुझे सात बेटे होंगे

हज़रते सय्यिदुना गौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की करामत बता कर ये रिवायात बयान की जाती है के एक औरत आप की खिदमत में हाज़िर हुई और कहा के या हज़रत मुझे बेटा दो!

आपने फ़रमाया के लौहे मेहफ़ूज़ में तेरी किस्मत में बेटा नहीं है।

औरत ने कहा : अगर लौहे मेहफ़ूज़ में होता तो आप के पास क्यों आती?

आप ने अल्लाह त'आला से अर्ज़ किया के या खुदा तू इस औरत को बेटा दे दे जवाब आया लौहे महफ़ूज़ में नहीं।

अर्ज़ किया के दो बेटे दे, हुक़्म हुआ के जब एक नहीं तो दो कहाँ से दू? अर्ज़ किया के तीन बेटे दे, इरशाद हुआ के एक भी नहीं तो तीन कहाँ से दू? इसकी तकदीर में बिलकुल नहीं।

जब वो औरत ना उम्मीद हो गयी तो गौसे आज़म ने ग़ुस्से में आ कर अपने दरवाज़े की ख़ाक से तावीज़ बना कर दे दी और कहा के जा! तुझे सात बेटे होंगे।
वो औरत खुश हो कर चली गयी और उस के सात लड़के हुए।

इस रिवायत के मुतल्लिक़ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शाह मुहम्मद अजमल क़ादरी रहिमहुल्लाह लिखते है के ये वाकिया किसी मोतबर व मुस्तनद किताब में नज़र से न गुज़रा और ब जाहिर बे अस्ल और लगव (वाहियात) मालूम होता है, इनसे इहतेराज़ करना चाहिए और "बहजतुल असरार" से हज़रत की करामात बयान करनी चाहिए

(ملخصًا: فتاوی اجملیہ، کتاب الحظر والاباحۃ، ج4، ص9، ط شبیر برادرز لاہور، س2005ء)

अब्दे मुस्तफ़ा

गौसे आज़म और हक़ गोयी

अल्लामा इब्ने कसीर अपनी तारीख में लिखते हैं कि हज़रते सय्यिदुना शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रदिअल्लाहु त्आला अन्हु खुलफ़ा, वुज़रा, सलातीन और अवाम व ख्वास सबको नेकी का हुक्म देते और बुराइयों से मना फरमाते और बड़ी साफ गोयी और जुर्रत के साथ इनको भरे मजमे में और बर सरे मिम्बर अलल ऐलान टोक देते थे और अल्लाह त्आला के मामले में किसी मलामत करने वाले की आपको परवा ना होती थी, इन्तिहायी बे बाक और हक़ गो थे।

(انظر: قلائد الجواہر، ص8، طبع بمطبعۃ عبد الحمید احمد حنفی بمصر)

अब्दे मुस्तफ़ा

हुज़ूर गौसे पाक का ख्वाब

ईमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रदिअल्लाहु त्आला अन्हु से सवाल किया गया कि क्या ये रिवायत सहीह है कि हुज़ूर गौसे पाक रदिअल्लाहु त्आला अन्हु ने ख्वाब देखा कि इमाम अहमद बिन हम्बल रदिअल्लाहु त्आला अन्हु फरमाते हैं कि मेरा मज़हब ज़यीफ हुआ जाता है लिहाज़ा (ए अब्दुल क़ादिर) तुम मेरे मज़हब मे आ जाओ, मेरे

मज़हब मे आने से मेरे मज़हब को तक़वियत हो जायेगी, इसलिये गौसे पाक हनफी से हम्बली हो गये?
आला हज़रत रदिअल्लाहु त्आला अन्हु ने जवाब में फरमाया कि ये रिवायत सहीह नहीं, हुज़ूर गौसे पाक हमेशा से हम्बली थे और बाद को जब मन्सबे इजतिहादे मुतलक हासिल हुआ तो मज़हबे हम्बल को कमज़ोर होता हुआ देखा तो इसके मुताबिक़ फ़तवा दिया कि हुज़ूर मुहियुद्दीन और दीन -ए- मतीन के ये चारों सुतून हैं, लोगों की तरफ से जिस सुतून मे ज़'अफ आता देखा उसकी तक़्वियत फरमायी।

(فتاوی رضویہ،ج26،ص433،رضافاؤنڈیشن لاہور،س1425ھ)

अब्दे मुस्तफ़ा

कुत्ते की तखलीक पर एक बे असल रिवायत

एक रिवायत बयान की जाती है के हज़रते आदम अलैहिस्सलाम के पुतले पर इब्लीस ने थूक दिया तो अल्लाह त'आला ने वहाँ से मिट्टी निकाल कर कुत्ता बना दिया (मुलक्खसन)
मैं (अब्दे मुस्तफ़ा) ने बाज़ लोगो को ये भी कहते हुए सुना के "चूँकि हज़रते आदम अलैहिस्सलाम की मिट्टी से कुत्ते को पैदा किया गया इसी लिए ये जानवर वफादार होता है और नापाक इस लिए के इब्लीस का थूक शामिल है"
इस रिवायात में इतने बारीक़ नुकतो को देख पाना हमारे बस की बात नहीं अलबत्ता जो हमारी आँखों ने देखा उसे बयान करते है
इस रिवायात के मुताल्लिक़ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती वकारुद्दीन क़ादरी रज़वी रहमतुल्लाही त'आला अलैह फरमाते है के ये रिवायात बे बुनियाद और लगव (बकवास) है, सहीह रिवायात में इसका कोई तज़किरा नहीं मिलता।

(وقار الفتاوی،ج1،ص344)

अब्दे मुस्तफ़ा

इमाम शैबी और झुटा मुकर्रिर

इमाम शैबी जो के अजिल्ला ताबईन में से हैं, फरमाते हैं के मैं एक मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए गया तो देखा एक लंबी दाड़ी वाला शख्स तक़रीर कर रहा था, उन्हें लोग घेरे हुए है, उसने बयान किया के नबीय्ये अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के अल्लाह त'आला ने दो सूर पैदा फरमाये है, हर सूर में दो बार फूँका जाएंगा एक बेहोशी के लिए एक क़यामत के लिए

इमाम शैबी ने उस मुकर्रिर से कहा के अल्लाह से डर! झूटी हदीस मत बयान कर, अल्लाह त'आला ने सिर्फ एक सूर पैदा किया है जिस में दो बार फूँका जाएंगा तो उस मुकर्रिर ने कहा के ए बदकिरदार! तू मेरा रद्द करता है और जूता उठा कर इमाम शैबी को मारने लगा फिर पूरा मजमा इमाम शैबी पर टूट पड़ा और पिटाई शुरू कर दी और इमाम शैबी कहेते है के मुझे उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक मैं ने ये नहीं कहा के अल्लाह त'आला ने दो सूर पैदा किये है, तो उन लोगो ने मेरी जान बख्शी

(ملخصًا، فتاوی شارح بخاری، ج2، ص130)

आज के मुकर्रिरीन और अवाम का भी यही हाल है, अगर कोई शख्स कह दे के फुलां मुकर्रिर ने झुटा वाकिया बयान किया है तो उसकी खैर नहीं

अब्दे मुस्तफ़ा

बीवी हो तो ऐसी

एक ताबई बुज़ुर्ग, हज़रते सईद बिन मुसय्यब रहमतुल्लाही त'आला अलैह ने अपनी साहबजादी का निकाह अपने एक तालिब -ए- इल्म से किया, दूसरे दिन सुबह के वक़्त जब उन के शौहर घर से निकलने लगे तो शहज़ादी साहिबा ने पूछा के मेरे सरताज! कहाँ तशरीफ़ ले जा रहे है?

उन्होंने कहा के इल्मे दीन सीखने के लिए (आपके वालिद) सईद बिन मुसय्यब की मजलिस में जा रहा हु शहज़ादी साहिबा ने कहा के आप बैठ जाए! (मेरे वालिद के पास मत जाये) इल्मे सईद मैं आप को सिखाती हूँ!

(انظر: المدخل لابن الحاج مکی، ج1، ص156 بہ حوالہ ماہنامہ فیضان مدینہ)

अल्लाह त'आला हमे भी ऐसी इल्म वाली बीवी अता फरमाये जो ख़िदमत -ए- दीन में हमारी मदद करे
आमीन।

अब्दे मुस्तफ़ा

झुटे मुकर्रिर ने हद कर दी

कभी कभी हमें मुकर्रिरीन से ऐसी रिवायात सुनने को मिलती है के हम हैरान व परेशान हो जाते हैं। ऐसे ऐसे किस्से के ना तो कभी आँखों ने देखे ना कानों ने सुने। ऐसी रिवायात सुन कर अवाम भी खुश होती है के चलो आज कुछ नया सुनने को मिला है। दौर -ए- हाज़िर में कुछ मुकर्रिरीन का यही रवैय्या है के बस कुछ नया होना चाहिए। ऐसे मुकर्रिरीन को बस अपने बाज़ार और अपनी शोहरत की फ़िक्र होती है। हमारे ज़माने के मुकर्रिरीन तो क़ाबिल -ए- तारीफ है ही लेकिन गुज़िश्ता ज़माने में भी ऐसे मुक़र्रिरीन गुज़रे है जिनके कारनामे क़ाबिल -ए- ज़िक्र हैं।
एक मरतबा इमाम अहमद बिन हम्बल और इमाम यहया बिन मुईन ने एक मस्जिद में नमाज़ अदा की, इसी दौरान एक किस्सा गो मुकर्रिर खड़ा हुआ और उसने बयान शुरू किया के
"मुझे अहमद बिन हम्बल और यहया बिन मुईन ने रिवायत की और उन्होंने अब्दुर्रज़्ज़ाक़ से रिवायत की, उनसे मामर ने, उनसे कतादा ने, उनसे अनस बिन मालिक ने के रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के जिस शख्स ने एक मरतबा कलिमा -ए- तैय्यबा पढ़ा तो अल्लाह त'आला उसके हर लफ्ज़ से एक परिंदा पैदा फरमाता है जिसकी चोंच सोने की होती है और उसके पर मरजान के होते है..... "और फिर इस हदीस को इतना तूल दिया के तकरीबन बीस सफहात में आये।
मुकर्रिर साहब की बयान करदा रिवायत सुन कर इमाम अहमद बिन हम्बल इमाम यहया बिन मुईन को देखने लगे और वो इमाम अहमद बिन हम्बल को।

इमाम अहमद बिन हम्बल ने इमाम इब्ने मुईन से पूछा के क्या आपने इसे ये हदीस बयान की? तो इमाम इब्ने मुईन ने कहा के ख़ुदा की क़सम! मैंने ये हदीस आज पहली बार सुनी है।
जब वो क़िस्सा गो अपनी तक़रीर से फ़ारिग़ हुआ तो इन दोनों ने उसको बुलाया और इमाम इब्ने मुईन ने पूछा के ये हदीस तुमसे किस ने बयान की? उसने जवाब दिया के मुझसे अहमद बिन हम्बल ने और यहया बिन मुईन ने बयान किया है, इस पर इमाम इब्ने मुईन ने फ़रमाया के मैं ही इब्ने मुईन हूँ और ये अहमद बिन हम्बल है और हम दोनों ने आज पहली बार ये हदीस तुम्हारे मुँह से सुनी है।
ये सुन कर उसने फ़ौरन कहा के अरे तुम इब्ने मुईन हो? उन्होंने कहा के हाँ मैं ही हूँ तो उसने कहा के मैंने तो सुना था के इब्ने मुईन अहमक़ है, आज इस बात की तस्दीक भी हो गयी!
इमाम इब्ने मुईन ने पूछा के तुमने कैसे जाना के मैं अहमक़ हूँ? उसने कहा के तुम समझते हो के दुनिया में तुम दोनों के इलावा कोई अहमद बिन हम्बल और इब्ने मुईन नहीं है, इन अहमद बिन हम्बल के इलावा मैंने सतरा (17) अहमद बिन हम्बलो से ये रिवायत सुनी है।

(الجامع الاحکام القرآن، ج1، ص69 بہ حوالہ نقد و نظر، ص13)

अब्दे मुस्तफ़ा

पुराने ज़माने के झुटे मुक़र्रिरीन

आज हमारे बीच कसीर तादाद में ऐसे मुक़र्रिरीन मौजूद है जो झूटी रिवायात और मनघड़त क़िस्से बयान करने में माहिर हैं। ऐसे मुक़र्रिरीन की तारीख़ बहुत पुरानी है चुनान्चे इमाम इब्ने क़ुतैबा (मुतवफ्फा 276 हिजरी) अपने ज़माने के मुक़र्रिरीन के बारे में क्या लिखते है उसे पढ़े, ऐसा लगता है कि दौरे हाज़िर उन की नज़रों में है।

आप लिखते है के ये वाईज़ीन जब जन्नत का ज़िक्र करते है तो कहेते है इस (जन्नत) में मुश्क या ज़ाफरान की हूरें होगी, इनके बदन की बनावट ऐसी होगी, अल्लाह त'आला ने अपने वलियों के लिए मोतियों का सफ़ेद महेल बनाया है जिस में सत्तर हज़ार ये होगा

सत्तर हज़ार वो होगा और फिर वो मुकर्रिर सत्तर सत्तर हज़ार की इतनी चीज़े बयान करेंगा के गोया जन्नत में किसी चीज़ की तादाद सत्तर हज़ार से कम होना जाएज़ ही नहीं।

(आप मज़ीद लिखते है) जितना ये (हैरत अंगेज़ रिवायतें) ज़्यादा होंगी उतना ही ताज्जुब और पसंदीदगी में इज़ाफ़ा होंगा और उतने ही देर तक लोग इनके पास बैठेंगे और फिर इतनी ही तेज़ी से बख्शीश और इनामात पेश किये जायेंगे।

(تاویل مختلف الحدیث لابن قطیبہ الدینوری، ص28 بہ حوالہ الدخیل فی التفسیر: احمد شحات موسی، ص59)

(ماخوذ از نقد و نظر)

हज़ारो साल पहले भी ऐसे मुक़र्रिरीन मौजूद थे जो लोगो को हैरान करने के लिए और उनसे नज़राने वसूल करने के लिए किस्से कहानियां सुनाया करते थे, आज भी ऐसे मुक़र्रिरीन की भरमार है जिनको अवाम में मक़बूलियत भी हासिल है। इनकी बयान करदा रिवायत मानो पत्थर की लक़ीर है यानि जो इन्होंने बयान कर दिया वो ग़लत हो ही नहीं सकता।

इनके मुकाबले में लोग बड़े से बड़े आलिम की बात मानने को भी तैयार नहीं होते।

अब तो बस इतना ही कहा जा सकता है के अल्लाह बचाएं ऐसे मुकर्रिरीन से।

अब्दे मुस्तफ़ा

लिखने वाले ज़रूर पढ़ें

इमाम कस्तलानी अलैहिर्रहमा ने एक किताब लिखी जिस में उन्होंने इमाम सुयूती अलैहिर्रहमा की किताबो से मदद ली लेकिन कहीं इमाम सुयूती का ज़िक्र नहीं किया। इमाम सुयूती कहा करते थे के उन्होंने मेरी किताबो से मदद ली और ये ज़ाहिर नहीं किया के वो मेरी किताबो से नक़ल कर रहे है, ये एक किस्म की खयानत है जो नक़ल में मायूब है और कुछ हक़ पोशी भी है।

इमाम सुयूती की इस शिकायत का इतना चर्चा हुआ के ये शिकायत शैख़ुल इस्लाम, ज़ैनुद्दीन ज़करिया अन्सारी के हुज़ूर मुहाकमा की शक्ल में पेश हुई।
इमाम सुयूती ने इमाम कस्तलानी को कई जगहों पर क़सूरवार ठेहराते हुए फ़रमाया के इन्होंने अपनी किताब में कई मवाके पर बैहकी के हवाले दिए है, ज़रा ये बताये के बैहकी की तसनिफ़ात किस क़द्र इनके पस मौजूद है और किन तसनिफ़ात से इन्होंने नक़ल की है।
जब इमाम कस्तलानी निशानदेही करने से आजिज़ रहे तो इमाम सुयुती ने कहा के आपने मेरी किताबो से नक़ल किया है और मैंने बैहकी से पस आपको लिखते वक़्त ये ज़ाहिर करना चाहिए था के आपने मुझ से नकल किया और मैंने बैहकी से ताकि मुझसे इस्तेफ़ादे का हक़ भी अदा होता और तस्हीह -ए- नक़ल की ज़िम्मेदारी से भी बरी हो जाते।
इमाम कस्तलानी मुल्ज़िम की हैसियत से मजलिस से उठे और हमेशा दिल में ये बात रखी के इमाम सुयूती के दिल से इस कुदूरत को धोया जाये।
एक रोज़ इसी इरादे से इमाम कस्तलानी नंगे सर व पैर इमाम सुयुती से मिलने शहरे मिस्र से बाहर निकले और इमाम सुयुती के दरवाज़े पर दस्तक दी, इमाम सुयुती ने दरयाफ्त किया के कौन? इमाम कस्तलानी ने कहा के मैं अहमद हूँ, बरहना सर -ओ- पा आपके दरवाज़े पर खड़ा हूँ के आपके दिल से कुदूरत को दूर कर के आपको राज़ी करूँ।
ये सुन कर इमाम सुयुती ने अंदर से कहा के मैंने दिल से कुदूरत निकाल दी, लेकिन न दरवाज़ा खोला और ना मुलाकात की!

(ملخصًا:بستان المحدثین مترجم، ص204،ط میر محمد کتب خانہ کراچی)

इस वाकिये से वो लोग सबक हासिल करे जो दूसरों की तहरीर को अपनी तरफ मंसूब करते है।
अगर हम किसी की तहरीर को नक़ल करते है तो चाहिए के उसे जू का तू रहने दे।
ये अम्र भी लाज़मी है के जिससे इस्तेफ़ादा किया गया है उसका ज़िक्र किया जाये।

अब्दे मुस्तफ़ा

जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है

एक मुअज़्ज़िन जिसने 40 साल तक मिनारे पर चढ़ कर अज़ान दि,एक दिन अज़ान देने के लिए मिनारे पर चढ़ा और अज़ान देते हुए जब "हयया अलल फलाह" पर पहुँचा तो उसकी नज़र एक नसरानी औरत पर पड़ी, उसकी अक्ल और दिल जवाब दे गये।
अज़ान छोड़ कर उस औरत के पास जा पहुँचा और उसे निकाह का पैगाम दिया,वो औरत कहने लगी के मेरा मेहर तुझ पर भारी होगा
उस शख्स ने कहा के तेरा मेहर क्या है? औरत बोली के दीन -ए- इस्लाम छोड़ कर मेरे मज़हब में दाखिल हो जा!
उस मुअज़्ज़िन ने इस्लाम को छोड़ कर उस औरत का मज़हब इख्तियार कर लिया!
(मआज अल्लाह)
फिर औरत ने कहा के मेरा बाप घर के निचले कमरे में है, तुम उस से जाकर निकाह की बात करो।
जब वो सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा तो उसका पाओं फिसल गया जिसकी वजह से कुफ्र की हालत में ही मर गया !!!
अपनी शहवत भी पूरी ना कर सका और दिन-ए-इस्लाम से भी हाथ धो बैठा।

(انظر: الروض الفائق ترجمہ بہ نام حکایتیں اور نصیحتیں، ص42، مکتبۃ المدینہ کراچی)

इस ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं के कब साथ छोड़ दे।
क्या पता आज रात हम सोएं और फिर आंख ही ना खुले।
अल्लाह तआला हमें बुरे खात्मे से बचाये।
(आमीन)

अब्दे मुस्तफ़ा

जन्नत में हुज़ूर ﷺ की शादी

हज़रते साद बिन जुनादा रदिअल्लाहु त्आला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह अज़्ज़वजल जन्नत में मेरी शादी हज़रते मरयम बिन्ते इमरान (यानी

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वालिदा) और हज़रत आसिया और मूसा अलैहिस्सलाम की बहन से फरमायेगा।

(انظر: المعجم الکبیر للطبرانی، مترجم، ج4، ص135، ح5353، ط پروگریسو بکس لاہور)

एक और रिवायत में है की रसूल -ए- करीम ﷺ ने हज़रते आईशा रदिअल्लाहु त्आला अन्हा से इरशाद फरमाया कि क्या तुम्हें मालूम है कि अल्लाह अज़्ज़वजल जन्नत में मेरा निकाह हज़रते मरयम बिन्ते इमरान और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बहन कुलसुम और फिरौन की (नेक वा पारसा) बीवी आसिया से करेगा।

(انظر: المعجم الکبیر للطبرانی، مترجم، ج5، ص724، ح7931، ط پروگریسو بکس لاہور)

हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद इम्तियाज़ क़ादरी हाफिज़हुल्लाह लिखते हैं कि तफसीर-ए-सावी में है कि पांच खवातीन अफज़ल हैं मरियम, खदीजा, फातिमा, आइशा और आसिया रदियल्लाहु त्आला अन्हुम अजमईन, बीवी आसिया और बीवी मरयम जन्नत में हुज़ूर ﷺ की अज़्वाज में से होंगी।

(انظر: عطائین اردو شرح تفسیر جلالین، ج1، ص401، ط ادارۂ فیضان رضا کراچی)

हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अकमल मदनी हफ़िज़हुल्लाह फ़तावा रज़विया के हवाले से लिखते हैं कि हज़रते मरयम, हज़रते कुलसुम और हज़रते आसिया का निकाह जन्नत में हुज़ूर ﷺ से होगा।

(ملخصاً: کیا آپ کو معلوم ہے؟، حصہ 1، ص146 بہ حوالہ فتاوی رضویہ قدیم، ج9، ص11)

हज़रत अल्लामा मुफ्ती अब्दुर रहीम हफिज़हुल्लाह तफसीर -ए- इब्ने कसीर, तफसीर -ए- दुर्रे मन्सूर, तफसीर -ए- खाज़िन, तफसीर -ए- क़ुर्तुबी वगैरा के हवाले से लिखते हैं कि जन्नत में हज़रत मरयम, हज़रत आसिया और हज़रत कुलसुम (कुलसुम/हकीमा/कलीमा) हुज़ूर ﷺ की ज़ौजियत से मुशर्रफ व सरफराज़ होंगी।

(ملخصاً: فتاوی بریلی شریف، ص222، ط زاویہ پبلشرز لاہور)

मुफ्ती मुहम्मद यूनुस रज़ा ओवैसी हफ़िज़हुल्लाह ने भी ये लिखा है कि जन्नत में हज़रत मरियम का निकाह हुज़ूर ﷺ से होगा।

(ایضاً، ص321)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

आप इन में से क्या हैं?

हज़रते अबु हुरैरा रदिअल्लाहु त्आला अन्हु बयान करते हैं कि मैने नबीय्ये करीम ﷺ को ये फरमाते हुए सुना :-

الا ان الدنیا ملعونۃ ملعونٌ ما فیھا الا ذکر اللہ وما والاہ وعالم او متعلم

तर्जुमा : दुनिया मल'ऊन (लानत ज़दा) है और इस में मौजूद हर चीज़ मल'ऊन है, सिर्फ अल्लाह त्आला का ज़िक्र, उसका ज़िक्र करने वाला, आलिम और तालिब-ए-इल्म (मल'ऊन नहीं है)

-ابن ماجہ، ج2، ص780، ر4112، ط شبیر برادرز لاہور، س2013ء

وترمذی، ج4، ص281، ر2322، ط دعوت اسلامی پاکستان

अल्लाह अज़्ज़वजल से दुआ है कि वो हमें दुनिया की मुहब्बत से बचाये और अपना ज़िक्र करने और ज़्यादा से ज़्यादा इल्मे दीन हासिल करने की तौफीक़ अता फरमाए।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

हज़रते फ़ातिमा की तरफ मंसूब एक मौज़ू रिवायत

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रहीमहुल्लाह से सवाल हुआ कि खातून -ए- जन्नत, हज़रत फ़ातिमा रदिअल्लाहु त्आला अन्हा की निसबत से ये बयान करना कि रोज़े महशर वो बरहना सरो पा (यानी नंगे सर और पैर) ज़ाहिर होंगी, इमाम हसन व हुसैन के खून आलूद और ज़हर आलूद कपड़े काँधे पर लिये हुये और नबीय्ये करीम ﷺ के दन्दान मुबारक जो जंगे उहुद में शहीद हुये थे उसे हाथ में लिये हुये बारगाहे इलाही में हाज़िर होंगी और अर्श का पाया पकड़ कर हिलाएंगी और खून के मुआविज़े में गुनहगार उम्मत को बख्शवायेंगी, ये सहीह है या नहीं?

इमामे अहले सुन्नत जवाबन लिखते हैं कि ये सब महज़ झूठ, इफ्तिरा, किज़्ब, गुस्ताखी और बे अदबी है, मजमा -ए- अव्वलीन व आखिरीन में उनका बरहना तशरीफ लाना जिनको बरहना सर कभी आफताब ने नहीं देखा, वो कि जब सिरात पर से गुज़र फ़रमायेंगी तो ज़ेरे अर्श से मुनादी निदा करेगा कि ए अहले महशर! अपने सर को झुका लो और अपनी आंखें बन्द कर लो कि फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद ﷺ सिरात पर गुज़र फ़रमायेंगी फ़िर वो नूरे इलाही बुर्क़ की तरह सत्तर हज़ार हूरें जलवे में लिये हुये गुज़र फरमायेगा।

(ملخصًا: احکامِ شریعت، ص160)

अब्दे मुस्तफ़ा

हुज़ूर ﷺ की उंगलियाँ मुबारक

हुज़ूर -ए- अकरम, सय्यिद -ए- आलम ﷺ की शहादत की उंगली मुबारक दर्मियानी उंगली से लम्बी थी और दर्मियानी उंगली अपने साथ वाली उंगली से लम्बी थी और वो अपने साथ साथ वाली उंगली से लम्बी थी यानी शहादत की उंगली मुबारक के बाद तीनों उंगलियाँ एक के बाद एक लम्बाई में छोटी थी। अल्लामा दुमेरी रहीमहुल्लाह ने इस पर गुफ्तगु करते हुए एक हदीस भी नक़ल की है और उस हदीस के बारे में इमाम इब्ने हजर हैतमी शाफयी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि, इस हदीस को शैखुल इस्लाम, इब्ने हजर रहीमहुल्लाह ने "असदुल गाबा" में और अल्लामा क़ुर्तुबी रहीमहुल्लाह ने सूरह -ए- बक़रह की तफ़सीर में ज़िक्र किया है।

(فتاوی حدیثہ، ص754، ط مکتبہ اعلی حضرت)

अब्दे मुस्तफ़ा

सहाबा को बुरा मत कहिये

इमाम बुखारी अलैहिर्रहमा (मुतवफ्फ़ा 256 हिजरी) फ़रमाते हैं कि मै ने एक हज़ार (1000) से ज़्यादा अहले इल्म से मुलाक़ात का शर्फ हासिल किया जिन में हिजाज़ -ए-

मुक़द्दस, मक्का, मदीना शरीफ, कूफ़ा, बसरा, वासित, बगदाद, शाम, मिस्र और जज़ीरा के बुज़ुर्ग भी हैं, और इन से सिर्फ एक बार ही नहीं 46 साल से ज़ायिद अर्सा में कई मर्तबा मुलाकात का शर्फ हासिल हुआ मगर मै ने इनमें से कोई एक बुज़ुर्ग भी ऐसे नहीं देखे जो सहाबा -ए- किराम की बुराई करते हों।

-ملتقطاً: شرح اصول اعتقاد اہل السنۃ والجماعۃ، ج1، 164، رقم320، ط مکتب دار البصیرۃ مصر

ومن ھو معاویہ، ص16

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

मुआफी की क्या बात है

एक बुज़ुर्ग को किसी ने खाने पर बुलाया, जब वो घर पहुँचे तो माज़रत कर ली कि खाने को कुछ नहीं है!

तीन बार बुला कर ऐसा ही किया लेकिन इन बुज़ुर्ग ने उफ्फ तक ना किया।

तीसरी मर्तबा वो शख्स क़दमों में गिर पड़ा और माफी मांगते हुये कहने लगा कि मैने तो आपका इम्तिहान लिया था।

ये सुन कर वो बुज़ुर्ग कहने लगे कि इसमें माफी मांगने की क्या बात है? ये मामला तो कुत्ते जैसा है, बुलाओ तो चला आता है और धुतकारो तो चला जाता है।

अल्लाहु अकबर! दौरे हाज़िर में ऐसा अख्लाक़ कहाँ देखने को मिलता है अगर हमें कोई दावत दे कर ऐसा करे तो आयिन्दा से उसकी दावत को क़ुबूल करना तो कुजा हम उसकी शक्ल देखना भी गवारा नहीं करेंगे, अभी तो हाल ये है कि खाने में थोड़ी बहुत कमी रह जाये तो हम शिकायतों के पहाड़ खड़े कर देते हैं।

अल्लाह त्आला हमें अख्लाक़ -ए- हसना अता फरमाए और तकब्बुर वा रियाकारी से महफूज़ रखे।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

OUR OTHER PAMPHLETS